بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-28.04.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र कथनों की रोशनी में कठिनाईयों तथा कष्टों पर धैर्य रखने का उपदेश।

यदि हर अहमदी अपने दायित्व को समझ ले तो अनेक समस्याओं का निवारण हमारे व्यवहार तथा दुआओं से निकल सकता है।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 28 अप्रैल 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- कुछ लोग मुझे शक्ति शालो प्रमाणों के साथ लिखते हैं कि पाकिस्तान में अथवा किसी अन्य स्थान पर जमाअत की स्थिति पर हमें धैर्य रखने के बजाए कुछ रदद अमल (प्रतिक्रिया) दिखाना चाहिए और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के उदाहरण देते हैं कि कुछ अवसरों पर आप रज़ी. ने इसकी अनुमति दी। ये बातें पूर्णतः अनुचित हैं जो आप रज़ी. से सम्बधित की जाती हैं। आप रज़ी. ने क़ानून की परिधि में रह कर कुछ बातें कहीं तथा काम किए किन्तु बिना सोचे समझे बुलवाईयों की तरह जलूस निकालने की अनुमति नहीं दी, यदि कहीं कोई आन्दोलन किसी रूप में हुआ तो ख़लीफ़ः वक़्त की आज्ञा के साथ था। यह नहीं कि हर कोई अफ़सर लोगों को जमा करके आन्दोलन आरम्भ कर दे।

भारत विभाजन से पहले जब अंग्रेज़ों का शासन था तथा हमारे विरोधी अफ़सरों ने प्रयास किया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद के भाषणों को भडकाऊ भाषण घोषित करके आप रज़ी. पर हाथ डाला जाए परन्तु हर बार इस लिए असफल होते थे कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. विरोधियों तथा सरकारी अफ़सरों को उनका चेहरा दिखा कर सदैव जमाअत को अन्त में फ़रमाया करते थे कि नबियों की जमाअतों का काम धैर्य तथा क़ानून की पाबन्दी है। जब भी विरोधी अफ़सरों ने कोशिश की, उनकी योजनाओं पर पानी फिर जाता था। यह किस तरह हो सकता है कि आप रज़ी. कोई बात ऐसी करते जो इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के विरुद्ध होती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो असंख्य स्थानों पर धैर्य एवं दुआ की प्रेरणा देते हुए फ़रमाया कि जिनके पाँव कोमल हैं तथा मेरे साथ कांटोंदार रास्तों पर नहीं चल सकते वे निश्चित ही मुझे छोड़ दें। अतएव यह धैर्य ही है जो दुनिया में जमाअत की विशेषता स्थापित किए हुए है।

कई मीडिया वालों को भी मैं प्रायः जवाब देता हूँ कि जो लोग हमें कष्ट दे रहे हैं, जो अत्याचार कर रहे हैं, उनमें से ही अहमदी भी हुए हैं तथा और लोग भी आ रहे हैं। हमारी भावनाएँ भी उनक जैसी ही थीं, हम भी प्रतिक्रिया दिखा सकते थे किन्तु हमने ज़माने के इमाम को माना है जिन्होंने शांति स्थापित रखने तथा अल्लाह तआला की कृपाओं का उत्तराधिकारी बनने के लिए यह शिक्षा दी है कि तुमने शांति से काम लेना है परन्तु क़ानून की सीमाओं में रह कर अपने अधिकार लेने की कोशिश करो। अतः स्पष्ट होना चाहिए कि यह नबियों का इतिहास है तथा यही हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा है कि हमने धैर्य एवं संतोष से काम लेना है। अतएव इस जवाब पर लोग चकित भी होते हैं तथा सराहना भी करते हैं कि यह अमन से रहने वालों की वास्तविक प्रतिक्रिया है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने धैर्य को एक अत्यंत महत्त्व पूर्ण चीज़ कहा है तथा फ़रमाया है कि यह नबियों की जमाअतों के महत्त्व पूर्ण तथा प्रमुख कत्तव्यों में से है जिसके बिना कोई जमाअत उन्नति नहीं कर सकती तथा न दुनिया को अपने पीछे चलने पर विवश कर सकती है तथा कोई जमाअत ऐसी नहीं आई जिसने इस कर्त्तव्य को पूरा किए बिना उन्नति का मुंह देखा हो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि धैर्य दो प्रकार का है। एक धैर्य यह है कि इंसान को किसी प्रतिक्रिया का सामर्थ्य हो तथा फिर वह धैर्य दिखाए। दूसरा उस समय का धैर्य है जब मुक़ाबले का सामर्थ्य ही न हो, अर्थात मजबूरी वाला धैर्य है। शक्ति होते हुए धैर्य यही है कि अत्याचार करने वालों का उत्तर न देना तथा अल्लाह तआला के लिए धैर्य ही प्रकट करना और मजबूरी का धैर्य यह है कि शक्ति न होते हुए आसमानी बलाओं पर अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए धैर्य एवं संतोष रखना। अल्लाह तआला ने विभिन्न स्थानों पर धैर्य रखने का निर्देश फ़रमाया है। अल्लाह तआला के निर्देशों को सम्मुख रखते हुए धैर्य के तीन अर्थ हैं। पहला पाप से बचना तथा अपने आपको उससे रोकना, दूसरा नेक कर्मों पर सुदृढ़ रहना, तीसरा रोने धोने से बचना। पहले अर्थ के अनुसार निरन्तर एवं दृढ़ संकल्प रहते हुए उन पापों से रुकना है जो उसे अपनी ओर खींच रहे हैं तथा उन बुराईयों के लिए तय्यार रहना है जो भविष्य में उसे खींच सकती हैं। दूसरे अर्थ के अनुसार इंसान दृढ़ता के साथ उन नेकियों पर क़ायम रहे जो उसे प्राप्त हो चुकी हैं तथा उनके लिए प्रयत्न करे जो उसे अभी नहीं मिली हैं। यह भी धैर्य की एक शाखा है जो इंसान को अल्लाह की निकटता दिलाने वाली है तथा यह निकटता दुआओं से ही मिल सकती है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ तथा धैर्य एवं दुआ के माध्यम से अल्लाह से सहायता मांगो तथा निःसन्देह विनम्रता धारण करने के अतिरिक्त यह काम करना कठिन है। अल्लाह का भय रखने वाले तथा विनयता दिखाने वाले हों, वही ऐसे धैर्य को अभिव्यक्त कर सकते हैं जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहने वाला हो। फिर फ़रमाया कि- وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ तथा जिन्होंने अपने रब

की ख़ुशी को पाने में दृढ़ता से काम लिया तथा नमाज़ को उत्तमता के अनुसार पूरा किया और जो कुछ हमने उन्हें दिया, उसमें से छुप कर भी तथा खुले रूप में भी हमारे लिए ख़र्च किया है तथा जो बुराई को नेकी के द्वारा दूर करते हैं उन्हीं के लिए उस घर (परलोक) का सुन्दर बदला निश्चित है। अतः धैर्य, निरन्तर कार्यरत रहने तथा विनय एवं दुआओं से अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहने का नाम है। यह उस समय होगा जब हम अपनी अवस्थाओं को अल्लाह तआला की शिक्षानुसार करेंगे तथा अपने जीवन व्यतीत करेंगे तथा अल्लाह तआला की ख़ुशी पाना हमारा उद्देश्य होगा।

दुशमन यह चाहता है कि हमारी प्रतिक्रिया हो तो वे और अधिक यातनाएँ दें, हमारे निज़ाम पर पाबन्दियाँ लगाने की चेष्टा करें। इस समय कुछ सरकारी अफ़सर विरोधियों को पीछे से सहयोग दे रहे हैं, तो इस तरह की प्रतिक्रिया पर स्थिति बिगड़ती है। कुछ ऐसी घटनाएँ जमाअत के इतिहास में हैं कि ऐसी बातों से जमाअत को हानि हुई परन्तु जब धैर्य के साथ परिस्थितियों को सुधारने के लिए प्रयास किए गए तो उसका लाभ भी हुआ, इस तरह कुछ अफ़सरों पर इसका सकारात्मक प्रभाव भी हुआ है। हमारी मारधाड़ की प्रतिक्रिया से तबलीग़ के प्रभाव में आने वाले लोगों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा तथा उन्हें कहने का अवसर मिलेगा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या बदलाव पैदा किया कि हम उनकी जमाअत में आ जाएँ? अतः यह बात याद रखें कि हमने जमाअत के विस्तृत एवं स्थाई लाभ के लिए कठिनाईयों को धैर्य के साथ सहन करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें यही शिक्षा दी है कि दूसरों की कठोरताओं को धैर्य के साथ झेलो एवं सहन करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में कई लोग आप स. तथा सहाबा रज़ी. के धैर्य को देख कर ही ईमान लाए थे। ये उदाहरण हज़रत मसीह मौऊद अलै. के ज़माने में भी मिलते हैं कि कई लोग आप अलै. का धैर्य एवं शिष्टाचार देख कर आप अलै. की जमाअत में शामिल हुए तथा आज भी यही स्थिति है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत के लिए भी वही कठिनाईयाँ हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश आईं। याद रखो इस प्रकार के संकट आना अनिवार्य हैं ताकि ख़ुदा तआला पर ईमान व्यापक हो तथा पवित्र बदलाव का अवसर मिले। मैं तुम्हें यह भी बता देता हूँ कि अल्लाह तआला यहाँ तक इस बात का समर्थन करता है कि यदि कोई व्यक्ति इस जमाअत मे होकर धैर्य तथा सहन शीलता से काम नहीं लेता तो वह याद रखे कि वह इस जमाअत में दाख़िल नहीं है। अतएव अपने मामले को ख़ुदा के हवाले कर दो, गालियाँ सुन कर भी सहन शीलता से काम लो, जब मैं धैर्य रखता हूँ तो तुम्हारा काम है कि तुम भी धीरज धरो।

आज दुनिया के हर एक देश में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सन्देश पहुंच चुका है और जमाअत क़ायम है। क्या किसी प्रतिक्रिया अथवा शक्ति प्रदर्शन से हुआ है, नहीं बल्कि बलिदानों तथा धैर्य एवं दुआओं के परिणाम स्वरूप हुआ है। अतः हमें धैर्य का प्रदर्शन करते रहना होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलै. की क़ौम ने उनको तुरन्त स्वीकार कर लिया था इस लिए उन्हें अपनी क़ौम की ओर से कोई विरोधी प्रतिक्रिया नहीं मिली परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी क़ौम से इंकार तथा अन्य कठिनाईयाँ सामने आई थीं।

आप स. पर विरोधी घटनाएँ तेरह वर्षों तक चली गईं किन्तु ख़ुदा तआला की ओर से आप स. को धैर्य तथा सुदृढ़ता पूर्वक जमे रहने का निर्देश था, बार बार आदेश होता था कि जिस प्रकार पहले नबियों ने धैर्य किया, तू भी धैर्य रख। अतः आप स. कभी शिथिल न पड़ते तथा सदैव क़दम आगे पड़ते थे।

एक अहमदी किसी गाँव से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा निवेदन किया कि मेरे गाँव में मदरसे का नौकर एक मौलवी बड़ा विरोधी है तथा मुझे बड़ा कष्ट देता है, हुज़ूर दुआ करें कि अल्लाह तआला उसका तबादला वहाँ से कर दे। आप अलै. मुस्कुराए और फ़रमाया कि इस जमाअत में जब दाख़िल हुए हो तो इसकी शिक्षानुसार कर्म करो, यदि कठिनाईयाँ न पहुंचें तो फिर सवाब क्यूँकर हो। पैग़म्बरे ख़ुदा ने तेरह बरस दुःख उठाए किन्तु सहाबियों को धैर्य ही की शिक्षा दी। अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि इस पाक जमाअत का दुनिया में फैलाए तथा ख़ुदा तआला तुम्हें उनके माध्यम से धैर्य की शिक्षा देना चाहता है, थोड़ी अवधि धैर्य के बाद देखोगे कि कुछ भी नहीं है, जो व्यक्ति दुःख देता है या तो तौबा कर लेता है या नष्ट हो जाता है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि धैर्य रखने वालों को वे बदले मिलेंगे जिनका कोई हिसाब नहीं है, फिर फ़रमाया कि सांसारिक लोग साधनों पर भरोसा करते हैं किन्तु ख़ुदा विवश नहीं। अतः अपने कर्मों को स्वच्छ करो, ग़फ़लत न करो, ग़फ़लत करने वाला शैतान का शिकार हो जाता है, तौबा को सदैव जीवित रखो ताकि वह व्यर्थ न हो जावे, सच्ची तौबा उत्तम बीज की तरह है जो अपने समय पर फल लाता है। हम तो अल्लाह तआला की ओर से धैर्य रखने के लिए नियुक्त किए गए हैं, तुम इनके लिए दुआ करो कि ख़ुदा तआला इनको भी हिदायत दे। अतः हमारी भी सफलता इसी में है कि हम आप अलै. के पदचिन्हों पर चलें।

फिर फ़रमाया कि हमारे ग़ालिब आने के हथ्यिार इस्तिग़फ़ार, तौबा, दीन का व्यापक परिचय, ख़ुदा तआला की महाना को सम्मुख रखना तथा पांचों समय की नमाज़ों को अदा करना। अतएव ये वे उपदेश हैं जो हमारी सफलता एवं उन्नति का आधार हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद के अनुसार यदि हम उचित रंग में इन उपदेशों पर ध्यान देते रहेंगे तो हमारी सफलता है, हमारो सफलता इन्शाअल्लाह निश्चित है। यदि हर अहमदी अपने दायित्व को समझ ले तो अनेक समस्याओं का निवारण हमारे व्यवहार तथा दुआओं से निकल सकता है। अल्लाह तआला हमें धैर्य तथा दुआओं का सामर्थ्य प्रदान करे तथा अपनो प्रसन्नता प्राप्ति के लिए इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ
سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا
شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ
ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ
وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131